विद्याभवन , बालिका विद्यापीठ,लक्खीसराय.

रूपम कुमारी ,वर्ग-सप्तम्, विषय-हिन्दी 🌷.

दिनांक- २९/६/२० 🌷 अध्ययन-सामग्री. 🌷.

बच्चों पूर्ण विश्वास है कि आप स्वस्थ होंगे । चलिए , इसी भरोसे आज की कक्षा शुरू करें ..इस कहानी के पात्र से हम कल परिचित हो चुके हैं । हमने कल पढ़ा कि शशि को देखकर उमा को बहुत दया आती है ,वह उससे मिलने उसके कमरे में जाती है तो शशि उसे मना करता है । अब आगे .....=_=

|| ||| स्नेह ||

" यह तो मैं नहीं जानता "शशि ने भोलेपन से कहा ,"पर मुझे किसी से बात करती देख लेती हैं तो मारा करती हैं । "

“ हमारे साथ बात करते देखकर वे नहीं मारेंगी । आओ हमारे साथ चलो ।

“. नहीं चाची ! हम हाथ जोड़ते हैं ।तुम चली जाओ । ताई आती होंगी । “

शशि की आंखें भर आई । उमा सहसा कुछ ना कह सकी । उसका ह्रदय शशि के लिए व्याकुल हो उठा । वह अभी इस नए घर में बहू बनकर आई है । वह ना शशि को समझ पाई है ,ना अपनी विधवा जेठानी निरुपमा को । जिस दिन अपने ससुराल में पैर रखा था उसी दिन निरुपमा ने उसको समझा दिया था “ बहुरानी ! इस अभागे बालक को मुंह ना लगाना ।

उमा ने सोचा था ,यह बालक अवश्य शैतान होगा परंतु इन 4 दिनों में ही उसे मालूम हो गया ,बालक शैतान नहीं है । उसका एकमात्र अपराधी यही है कि वह बिना मां बाप का है । " यह भी क्या अपराध है? " उमा वही खड़ी-खड़ी सोचती रही ।

और उधर पूजा घर में उमा को ना पाकर निरुपमा वहीं आ गई। उसने उमा को शशि की कोठरी के पास जाकर खड़े देखा । वह चिल्ला उठी " जो जानबूझकर सांप के मुंह में उंगली डाले उसे कौन बचा सकता है?"

शेष कल .....🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷 । दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें और समझने का प्रयास करें ।